भारतीय चित्रकला (भाग-I)

प्रलिम्सि के लयि:

भारतीय चत्रिकला, मुगल और राजपूत शैली, चत्रिकला के सद्धिांत, भीमबेटका के शैल चत्रि, सधिु घाटी सभ्यता के चत्रिति मट्टिी के बरतन, वात्स्यायन का कामसूत्र, रूपभेद, सदृस्यान, भाव, वर्णकिभंगा, प्रमाणम, लावण्ययोगनम, लेप्य चत्रि, प्रागैतहासकि चत्रिकला,पेट्रोग्लफि्स, 'चड़ियिाघर रॉक शेल्टर', भत्तिचित्रि, अजंता गुफा चत्रिकला, एलोरा गुफा चत्रिकला, अरमामलाई गुफा चत्रिकला, जोगीमारा गुफा चत्रिकला, लघु चत्रिकला, पाल स्कूल ऑफ आर्ट, अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट, दल्लिी सल्तनत के दौरान लघु कला, नमितनामा (पाक कला पर एक कताब), मुगल काल की लघु चत्रिकला, संक्षप्तीकरण की तकनीक, तसवीर खाना, तूतीनामा (एक तोते की कहानी), सुलेख, राजस्थानी चत्रिकला शैली, मेवाड़ चत्रिकला शैली, साहबिदीन, 'तमाशा' पेंटगि, कशिनगढ़ चत्रिकला शैली, बनी-ठनी, चत्रिकला की पहाड़ी शैली, जम्मू या डोगरा स्कूल, कांगड़ा स्कूल, बशोली स्कूल, रागमाला पेंटगि, दक्षणि भारत में लघुचत्रि, तंजौर पेंटगि, मैसूर पेंटगि, गेसो पेस्ट', आधुनकि पेंटगि, कंपनी पेंटगि, बाज़ार पेंटगि, राजा रवविर्मा, पूर्व का राफेल, रंग रसयाि, बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट, अभनींद्रनाथ टैगोर, भारत माता, रवींद्रनाथ टैगोर, पेंटगि की क्यूबसि्ट शैली, एम.एफ.हुसैन, रोमांस का व्यक्तत्वि, प्रगतशील कलाकार समूह।

मेन्स के लयि:

भारत में चत्रिकला का वकिस, प्रागैतहासकि चत्रिकला के संरक्षण की आवश्यकता, अतीत के ऐतहासकि अभलिखों के रूप में चत्रिकारी, चत्रिकला के साथ भारतीय दर्शन का मश्रिण।

संदर्भ:

भारत में **कलात्मक उत्कृष्टता की एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा है, जसिमें चत्रिकला अपनी अभवि्यक्ति के लयि एक प्रमुख माध्यम के रूप में उभर रही है,** जो प्राचीन काल से देश में फल-फूल रही है। चत्रिकला के इतहिस का पता प्राचीन और मध्ययुगीन काल से लगाया जा सकता है जहाँ पुस्तकों को चत्रिों के साथ चत्रिति कयि जाता था। **मुगल और राजपूत दरबारों में लघु शैली का बोलबाला था।** यूरोपीय लोगों के आगमन के साथ चत्रिकला और उत्कीर्णन की कला ने पश्चमी स्वरूप ले लयि।

- **चत्रिकला का इतहिस भीमबेटका, मरि्ज़ापुर तथा पंचमढ़ी के आदमि शैलचत्रिों से जाना जा सकता है।** उनके बाद **सधिु घाटी सभ्यता** के चत्रिति मट्टिी के बर्तनों का प्रचलन हुआ लेकनि चत्रिकला की कला की वास्तवकि शुरुआत **गुप्त युग** से हुई।

चत्रिकारी के सद्धिांत क्या हैं?

- तीसरी शताब्दी ईस्वी में **वात्स्यायन ने अपनी पुस्तक कामसूत्र में चत्रिकला के छह मुख्य सद्धिांतों/अंगों या षडंगों का उल्लेख कयि है।** वे हैं:
  - रूप की ववधिता - रूपभेद
  - वषिय की सादृश्यता का नरिूपण - सदृस्यान
  - रंगों से दीप्त और दमक का सृजन- भाव
  - मॉडलगि के प्रभावों से मलिता-जुलता रंगों का मश्रिण - वर्णकिभंगा
  - वस्तु या वषिय का समानुपात - प्रमाणम्
  - भावों का वसिर्जन - लावण्यायोगनम्
- **ब्राह्मणवादी और बौद्ध साहत्यि में चत्रिकला की कला** के कई संदर्भ हैं, उदाहरण के लयि, वस्त्रों पर मथिकों तथा वद्यि का प्रतनिधित्वि **लेप्या चत्रि** के रूप में जाना जाता है।
- **वशाखदत्त के नाटक मुद्राराक्षस** में **वभिन्नि चत्रिों या पटों** के नामों का भी उल्लेख है, जो चत्रिों की वभिन्नि शैलयिों को समझने और चत्रिों के सभी सद्धिांतों का पालन करने के लयि महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रागैतहासकि चत्रिकला क्या हैं?

परचिय:

- प्रागैतहािसक िक काल की चित्रकारी आम तौर पर चट्टानों पर की जाती थी और इन चट्टानों पर की गई नक्काशी को **पेट्रोग्लिफ** कहा जाता था। प्रागैतहािसक िचित्रों को सर्वप्रथम वर्ष 1957-58 में मध्य प्रदेश में भीमबेटका गुफाओं में खोजा गया था।
- इन चित्रों को **'चिड़ियाघर रॉक शेल्टर'** कहा गया है क्योंकि इनमें **हाथी**, **गैंडा**, **मवेशी**, **साँप**, **चितीदार हिरण**, **बारासिंघा** आदि का चित्रण है।

तीन प्रमुख चरण:

- **उच्च पुरापाषाण काल (40000-10000 ईसा पूर्व):** शैलाश्रय गुफाओं की दीवारें क्वार्टज़ाइट से बनी थीं और इसलिये उनमें रंगद्रव्य के लिये खनिजों का उपयोग किया जाता था।
- सबसे **मुख्य खनिज गेरू था, जिसे चूने और पानी** के साथ मिलाया जाता था।
  - **सफेद**, **गहरे लाल और हरे रंग का उपयोग बड़े जानवरों** जैसे बाइसन, हाथी, गैंडा, बाघ आदि को चित्रित करने के लिये किया जाता था। मानव मूर्तियों के लिये, **लाल रंग का उपयोग शिकारियों के लिये और हरे रंग का उपयोग अधिकतर नर्तकियों के** लिये किया जाता था।

Man and humped bulls in different colours from Bhimbetka - World Heritage List of UNESCO

//

- **मध्यपाषाण काल (10000-4000 ई.पू.):** इस काल में मुख्यतः **लाल रंग का प्रयोग** देखा गया। उच्च पुरापाषाण काल की तुलना में इस **काल में चित्रों का आकार भी छोटा** हो गया।
  - इन चित्रों में चित्रित सबसे **आम दृश्य समूह शिकार के हैं और कई अन्य चित्रों में चराई गतिविधि तथा सवारी के दृश्य दर्शाए गए** हैं।

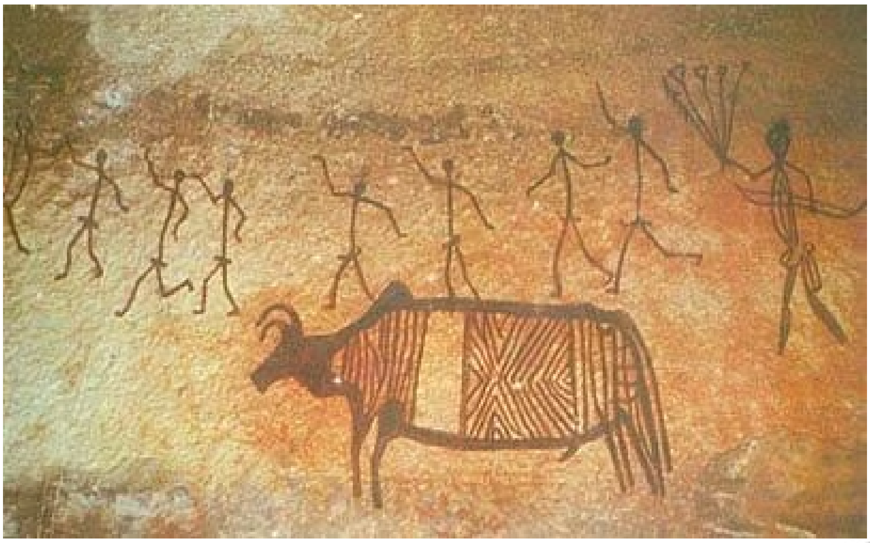

- **ताम्रपाषाण काल (3500 ई.पू.-1000 ई.पू.):** इस अवधि में **हरे और पीले रंगों का उपयोग करने वाली पेंटिंग्स की संख्या में वृद्धि** देखी गई।
  - अधिकांश पेंटिंग युद्ध के दृश्यों को चित्रित करने पर केंद्रित हैं।
- ताम्रपाषाण काल की कुछ पेंटिंग छत्तीसगढ़ के सरगुजा ज़िले में **रामगढ़ पहाड़ियों में जोगीमारा गुफाओं** में देखी जा सकती हैं। इन्हें लगभग 1000 ईसा पूर्व चित्रित किया गया माना जाता है।

भीमबेटका रॉक पेंटिंग क्या हैं?

- **परिचय:**
  - यह मध्य प्रदेश की विंध्यन पर्वतमाला में भोपाल के दक्षिण में स्थित है। शैलाश्रयों में **500 से अधिक शैलचित्र** हैं। इसे **वर्ष 2003 में** [यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल]() घोषित किया गया था।
    - अनुमान है कि सबसे पुरानी चित्रकला 30,000 वर्ष पुरानी हैं और गुफाओं के अंदर गहराई में स्थित होने के कारण बची हुई हैं।
  - **100,000 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी तक** गुफाओं के अधिवास में उल्लेखनीय निरंतरता है, जिसमें कई **चित्र एक दूसरे के ऊपर चित्रित किये गए हैं।**
  - भीमबेटका की चित्रकला [उच्च पुरापाषाण, मेसोलिथिक, ताम्रपाषाण](), **प्रारंभिक ऐतिहासिक और मध्ययुगीन काल से संबंधित हैं।** हालाँकि, **अधिकांश चित्रकला मध्यपाषाण युग की हैं।**
    - **दैनिक कार्यों का रूपांकन:** चित्रकला आमतौर पर छड़ी जैसी मानव आकृतियों में प्रागैतिहासिक पुरुषों के **रोज़मर्रा के जीवन को चित्रित** करती हैं। हाथी, बाइसन, हिरण, मोर और साँप जैसे विभिन्न जानवरों को चित्रित किया गया है।
    - **शिकार के दृश्य का वर्चस्व:** चित्रों में **शिकार के दृश्य और युद्ध के दृश्य** भी दिखाए जाते हैं जिनमें धनुष, तीर, भाले, ढाल तथा तलवार जैसे हथियार ले जाने वाले पुरुष होते हैं।
    - **ज्यामितीय प्रतीकों का उपयोग:** कुछ चित्रों में सरल ज्यामितीय डिज़ाइन और प्रतीक भी होते हैं। **चित्रों के अन्य विषय नृत्य, संगीत, जानवरों की लड़ाई, शहद संग्रह आदि हैं।**
    - **सामाजिक जीवन का चित्रण:** बच्चों के खेलने, भोजन बनाने वाली महिलाओं, सामुदायिक नृत्य आदि की उपस्थिति के साथ सामाजिक जीवन का अच्छी तरह से चित्रण किया गया है।

भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण क्या है?

भारत में भित्तिचित्र

- **दीवारों अथवा किसी ठोस संरचना पर किये गए कार्यों** को भित्तिचित्र कहा जाता है। ये भारत में प्राचीन काल से मौजूद हैं और इन्हें 10वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 10वीं शताब्दी ईस्वी के बीच का माना जा सकता है।
- भित्तिचित्र अपने **विशाल आकार के कारण अद्वितीय** हैं। उन्हें कागज़ पर समाहित नहीं किया जा सकता है साथ ही उन्हें बड़ी संरचनाओं, आमतौर पर गुफाओं और मंदिर की दीवारों की दीवारों पर निष्पादित करने की आवश्यकता होती है।
- प्राचीन काल में, इनका उपयोग तीन प्रमुख धर्मों द्वारा किया जाता था: [बौद्ध धर्म](), [जैन धर्म]() **एवं** [हिंदू धर्म]()। भित्तिचित्रों के कुछ सर्वोत्तम उदाहरण हैं:
  - **अजंता गुफा चित्र:**
    - [अजंता की गुफाएँ]() चौथी शताब्दी ईस्वी में ज्वालामुखीय चट्टानों से बनाई गई थीं। इसमें **30 गुफाओं का एक शृंखला** है, जो **घोड़े की नाल के आकार** में है। ये गुफाएँ अपने उत्कृष्ट भित्तिचित्रों के लिये काफी लोकप्रिय हैं, जिन्हें [मौर्य साम्राज्य]() के शासनकाल में **पूरा होने में लगभग चार से पाँच शताब्दियाँ** लगीं।

        - गुफा संख्या में भित्तिचित्रि **9 तथा 10 शुंग काल** के हैं, जबकि शेष गुप्त काल के हैं। गुफाओं की दीवारों पर भित्तिचित्रि एवं भित्तिचित्रि (गीले प्लास्टर पर चत्रिति) दोनों हैं। वे **टेम्पेरा शैली का उपयोग** करते हैं, अर्थात् रंगद्रव्य का उपयोग करते हैं।
        - इन चत्रिों के सामान्य वषिय जातक कथाओं से लेकर बुद्ध के जीवन से लेकर वनस्पतियों और जीवों के वस्तितृ सजावटी पैटर्न तक हैं।
    - **एलोरा गुफा चत्रि:**
        - **एलोरा की गुफाओं** में **भत्तिि चत्रि पाँच गुफाओं** में प्राप्त कयि जाते हैं, जो **अधकितर कैलासा मंदरि तक ही सीमति** हैं। ये भत्तिचित्रि दो चरणों में बनाए गए थे।
            - पहले चरण की चत्रिकारी गुफाओं की नक्काशी के दौरान की गई थी, जबकि दूसरे चरण की चत्रिकारी कई सदयिों बाद की गई थी।
        - **पहले के चत्रिों में वषि्णु को उनकी पत्नी लक्ष्मी के साथ** आकाशीय पक्षी गरुड़ द्वारा बादलों के बीच से ले जाते हुए दखिाया गया है। **गुजराती शैली में बने बाद के चत्रिों में शैव पवति्र पुरुषों के जुलूस का चत्रिण** कयिा गया है।
    - **अरमामलाई गुफा चत्रि:**
        - **अरमामलाई गुफा चत्रिकला** तमलिनाडु के वेल्लोर ज़लि में स्थति हैं, इन प्राकृतकि गुफाओं को **8वीं शताब्दी में जैन मंदरि में परवि्रततित** कर दयिा गया था। गुफा के भीतर कच्ची मट्टिी की संरचनाएँ स्थति हैं, जो जैन संतों के लयि वशि्राम स्थल के रूप में रही थी।
        - दीवारों एवं छत पर सुंदर रंगीन पेंटगि **अष्टथकि पालकों** (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) के साथ ही **जैन धरम की कहानयिों** को दर्शाती हैं।
    - **जोगीमारा गुफा चत्रिकला:**
        - **जोगीमारा गुफा चत्रिकला** **छत्तीसगढ़** के **सरगुजा ज़लि** में स्थति एक कृत्रमि रूप से नरि्मति नक्काशीदार गुफा है। यह लगभग 1000-300 ईसा पूर्व का है और इसमें ब्राह्मी लपिमिें एक प्रेम कहानी के कुछ चत्रि एवं शलािलेख शामलि हैं।
        - ऐसा कहा जाता है कि **गुफा रंगभूमि से जुड़ी** हुई थी और साथ ही कमरे को सजाने के लयि चत्रिकला बनाई गई थीं।

लघु पेंटगि

परचिय:

- 'मनिएिचर' शब्द लैटनि शब्द 'मनियिम' से लयिा गया है, जसिका अर्थ है लाल सीसे वाला पेंट। इस **पेंटगि का उपयोग पुनर्जागरण काल के दौरान प्रबुद्ध पांडुलपियिों में** कयिा गया था।
- यह आमतौर पर न्यूनतम शब्द के साथ भ्रमति होता है, जसिका अर्थ होगा कि वे **आकार में छोटे** थे। **भारतीय उपमहाद्वीप में इन लघु चत्रिों की लंबी परंपरा** है और साथ ही इसके कई स्कूल वकिसति हुए हैं जनिकी रचना एवं परप्रिेक्ष्य में अंतर है। ये लघुचत्रि छोटे एवं वस्तितृ चत्रि हैं।
- **चत्रिकला 25 वर्ग इंच से अधकि बड़ी नहीं** होनी चाहयि। पेंटगि का वषिय वास्तवकि आकार के **1/6 से अधकि नहीं होना** चाहयि।
- आमतौर पर उनकी आँखें उभरी हुई, नुकीली नाक तथा कमर पतली होती है।

प्रारंभकि लघुचत्रि: आरंभकि लघुचत्रि प्रारंभ में कम परषिकृत थे, जनिमें **न्यूनतम सजावट** थी। समय के साथ, वे अधकि **वस्तितृ अलंकरणों को शामलि** करने के लयि वकिसति हुए, अंततः आज के लघुचत्रिों के समान बन गए, जो इस चत्रिकला के प्रारंभकि चरण का प्रतनिधित्वि करते हैं।

- इन्हें प्राय: कागज़, ताड़ के पत्तों तथा कपड़े सहति खराब होने वाली सामग्री पर कतिाबों अथवा एल्बमों के लयि चत्रिति कयिा जाता था। ये पेंटगि 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच वकिसति हुईं और इसका श्रेय पूर्वी तथा पश्चमिी क्षेत्रों को दयिा जा सकता है। प्रारंभकि **लघु चत्रिकला के दो प्रमुख शाखा** हैं:
- **चत्रिकला की पाल शाखा: यह शाखा 750-1150 ई. के दौरान फल-फूल रही थी। ये पेंटगि आमतौर पर बौद्ध पांडुलपियिों के रूप में पाई जाती हैं और साथ ही आमतौर पर ताड़ के पत्ते अथवा चर्मपत्र पर बनाई जाती थीं।**
    - इन चत्रिों की वशिषेता टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं एवं पृष्ठभूमि चत्रिण के धीमे स्वरों की वशिषेता है। चत्रिों में एकाकी एकल आकृतयिाँ हैं और साथ ही समूह चत्रि कम ही प्राप्त होते हैं।
    - बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के समर्थकों ने भी इन चत्रिों का उपयोग एवं संरक्षण कयिा।
- **अपभ्रंश कला शाखा:** इस शाखा की उत्पत्ति गुजरात एवं राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र से हुई है। यह 11वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान पश्चमिी भारत में चत्रिकला का प्रमुख शाखा थी।
    - इन चत्रिों के सबसे सामान्य वषिय जैनधर्म से था और बाद के काल में वैष्णव संप्रदाय ने भी इन्हें अपना लयिा।

Fig. 2.13: *Apabhramsa school of art*

- **संक्रमण काल लघुचित्र:** भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिमों का आना परिवर्तन का संकेत था और साथ ही यह 14वीं शताब्दी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल भी था।

Fig. 2.14: *Transition period miniature*

- **दिल्ली सल्तनत में लघुचित्र:** इन चित्रों ने अपने मूल के फारसी तत्त्वों को पारंपरिक भारतीय तत्त्वों को एक साथ लाने का प्रयास किया।
  - इस काल का सर्वोत्तम उदाहरण **मांडू पर शासन करने वाले नासिर शाह** के शासनकाल के दौरान **निमतनामा (पाक कला पर एक पुस्तक)** है।

- **मुगल काल के लघुचित्र: मुगल काल में बनाए गए चित्रों** की एक विशिष्ट शैली थी क्योंकि वे **फारसी पृष्ठभूमि से** ली गई थीं।
  - रंग पैलेट, थीम एवं रूपों में बदलाव आया। यह **ईश्वर का चित्रण करने से हटकर शासक की महिमा करने एवं उसके जीवन को दर्शाने पर केंद्रित** हो गई।
  - उन्होंने शिकार के दृश्यों, ऐतिहासिक घटनाओं एवं न्यायालय से संबंधित अन्य चित्रों पर ध्यान केंद्रित किया।
  - चित्रकारों को **रेखाचित्रों की सटीकता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित** करना था। धार्मिक चित्रकलाओं को छोड़कर, मुगल अपने **विविध विषयों के लिये** जाने जाते थे।
  - वे भारतीय चित्रकारों के प्रदर्शनों की सूची में **लघुकरण की तकनीक** लेकर आए। इस तकनीक के तहत, **"वस्तुओं को इस तरह से खींचा जाता था कि वे वास्तव में जितनी वे हैं उससे अधिक करीब और छोटी दिखती थीं।"**

उत्तरोत्तर शासकों के अधीन चित्रकला की शैलियाँ इस प्रकार हैं:

मुगल सम्राट	**चित्रकला में योगदान**	**उल्लेखनीय कलात्मक उपलब्धियाँ**
बाबर	मुगल चित्रकला के लिये फारसी कलाकार **बहिज़ाद को संरक्षण** दिया।	अल्प शासनकाल के कारण **प्रत्यक्ष भागीदारी सीमित** रही।

हुमायूँ	चत्रिकला के महान संरक्षक, **मुगल चत्रिकला पर फारसी प्रभाव** डाला तथा सचत्रि एल्बम बनाए।	**फारसी कलात्मक शैलयिों को बढ़ावा** दयिा और मुगल चत्रिकला को प्रभावति कयिा।
अकबर	**वेतनभोगी चत्रिकारों** के साथ एक औपचारकि कलात्मक स्टूडयिो, **तस्वीर खाना की स्थापना** की। सचत्रि पांडुलपि **"तूतीनामा" की रचना** की। **चत्रिों में सुलेख को प्रोत्साहति** कयिा।	प्रमुख पांडुलपियिाँ: **तूतीनामा (एक तोते की कहानी), हमज़ानामा, अनवर-ए-सुहैली** तथा **सादी का गुलस्तिान।**
जहाँगीर	मुगल **चत्रिकला के चरमोत्कर्ष** पर पहुँचे। **वनस्पतयिों एवं जीवों (पक्षी, जानवर, पेड़, फूल) जैसे प्राकृतकि वषियों को प्राथमकिता** दी जाती है। **चत्रिों के चारों ओर सजाए गए हाशयि का चलन** शुरू कयिा गया।	जहाँगीर स्वयं एक कुशल कलाकार था। **ज़ेबरा, टर्की और मुर्गे के प्राकृतकि चत्रिों** के लयि जाना जाता है।
शाहजहाँ	**यूरोपीय कला से प्रभावति** होकर जीवंतता को कम करने एवं शांत का परचिय देने का प्रयास कयिा गया। **स्केचगि के लयि पेंसलि के उपयोग को प्रोत्साहति** कयिा। चत्रिकला में **सोने और चाँदी का उपयोग** बढ़ा साथ ही **चमकीले रंग पैलेट को प्राथमकिता** दी गई।	कलात्मक शैली यूरोपीय प्रभाव एवं शांतिऔर समृद्धमिें बदलाव से चह्निति होता है।
औरंगज़ेब	**चत्रिकला को प्रोत्साहति नहीं** कयिा, जसिके परणािमस्वरूप **मुगल दरबार के चत्रिकारों का राजस्थान जैसे क्षेत्रों में प्रांतों में प्रवास** हुआ।	उनके शासनकाल के दौरान **मुगल चत्रिकला के पतन** में योगदान दयिा।

क्षेत्रीय चत्रिकला शाखा: क्षेत्रीय कला शाखा ने अपनी भारतीय मूल शैली के साथ ही अधकि प्राकृतकि मुगल शैली के वपिरीत रंगीन चत्रिों के प्रतरिुचि को प्रदर्शति कयिा। इस अवधमिें वकिसति हुए वभिन्नि शाखा तथा शैलयिाँ इस प्रकार थीं:

- **राजस्थानी चत्रिकला शैली: यह चत्रिकला की राजपूत शैली का पर्याय है। राजस्थानी चत्रिकला की कई उप-शैलयिाँ हैं जो उनकी मूल रयिासत के अनुरूप भी हैं।**
  - **मेवाड़ चत्रिकला शैली:** मेवाड़ चत्रिकला में **साहबिदीन की असाधारण छवि का प्रभुत्व** है। मेवाड़ी चत्रिकला का यह काल साहबिदीन के साहत्यिकि ग्रंथों **रसकिप्रयिा, रामायण एवं भागवत पुराण** के चत्रिण पर केंद्रति है।
    - इस काल का अनूठा बदिु असाधारण **'तमाशा' चत्रिकला** शैली हैं जो अभूतपूर्व वस्तिार से दरबारों के समारोहों एवं शहर के दृश्यों को दर्शाती हैं।
  - **कशिनगढ़ चत्रिकला शैली:** कशिनगढ़ चत्रिकला शैली सबसे रोमांटकि कविदंतयिों - सावंत सहि और उनकी **प्रयि बणी-ठणी** के साथ-साथ जीवन एवं मथिकों, रोमांस तथा भक्त के अंतर्संबंध से जुड़ी हुई है। कभी-कभी यह तर्क दयिा जाता है क**बिणी-ठणी' में महलिाएँ राधा के चरत्रि के समान प्रतीत** होती हैं।
- **चत्रिकला की पहाड़ी शैलयिाँ: चत्रिकला की यह शैली उप-हमिालयी राज्यों में वकिसति हुई जो मुगल आधपित्य के अधीन थे। इसलयि, पहाड़ी चत्रिकला को दो समूहों में वभिाजति कयिा जा सकता है:**
  - **जम्मू या डोगरा शाखा:** उत्तरी शृंखला
  - **बशोली तथा कांगड़ा शाखा:** दक्षणिी शृंखला
  - एक वशिष्टि पहाड़ी चत्रिकला कैनवास में कई आकृतयिाँ लाती है। प्रत्येक आकृत संरचना, रंग एवं रंजकता में भन्नि होती है।
  - **बशोली शाखा:** यह शुरुआती चरण था इसमें पीछे हटती बालों की रेखा के साथ ही कमल की पंखुड़यिों के आकार की बड़ी आँखों वाले अभव्यिंजक चेहरे इसकी वशिषता बताते हैं। इन चत्रिों में बहुत सारे प्राथमकि रंगों का उपयोग कयिा जाता है, जैसे क लिाल, पीला तथा हरा। उन्होंने कपड़ों पर पेंटगि की मुगल तकनीक का प्रयोग कयिा गया और साथ ही अपनी वशिष्टि शैली एवं तकनीक वकिसति की।
  - **कांगड़ा शाखा:** इन चत्रिों में **कामुकता एवं बुद्धमित्ता का चत्रिण** कयिा गया था, जसिका अन्य शाखा में अभाव था। **चत्रिों का सबसे प्रसद्धि समूह 'ट्वेल्व मंथ्स'** है जहाँ **कलाकार ने बारह महीनों के प्रभाव को मनुष्य की भावनाओं के अनुसार प्रदर्शति** करने की कोशशि की गई।

क्या भारतीय चत्रिकला की अधकिांश शैलयिों में कोई एक समान चत्रिकला शैली है?

- **रागमाला चत्रिकला:** रागमाला चत्रिकला मध्यकालीन भारत की रागमाला या **'रागों की माला'** पर आधारति चत्रिों की एक शृंखला है, जो वभिन्नि भारतीय संगीत रागों को दर्शाती है। यह मध्यकालीन भारत में कला, कवतिा और शास्त्रीय संगीत के मश्रिण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **रागमाला चत्रिकला** 16वीं और 17वीं शताब्दी में चत्रिकला के **अधकिांश भारतीय शैलयिों में नरि्मति है,** आज इन्हें **पहाड़ी रागमाला, राजस्थान या राजपूत रागमाला, दक्कन रागमाला तथा मुगल रागमाला** का नाम दयिा गया है।
- इस चत्रिकला में, **प्रत्येक राग को एक वशिष रूप में नायक और नायकिा** (नायक और नायकिा) की कहानी का वर्णन करने वाले रंग द्वारा व्यक्त कयिा गया है। यह **मौसम, दनि और रात के समय को भी स्पष्ट करता** है, जसिमें एक वशिष राग गाया जाना है।
- इसके अतरिक्ति, कई चत्रिकला राग से जुड़े वशिष्टि हदिू देवताओं का भी सीमांकन करती हैं, जैसे क भैरव या भैरवी से शवि, श्री से देवी आद। **रागमाला में मौजूद छह प्रमुख राग हैं भैरव, दीपक, श्री, मालकौश (Malkaush), मेघा और हडिोला।**

दक्षिण भारत में लघुचित्र (Miniatures)

- इन चित्रों में **सोने के अधिक उपयोग** के कारण दक्षिण भारतीय राज्यों में लघु चित्र के निर्माण का चलन उत्तर भारतीय शैलियों से भिन्न है। इसके अतिरिक्त **इन चित्रों में शासकों को चित्रित करने की तुलना में दिव्य प्राणियों को चित्रित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित** किया, जिन्होंने संरक्षण प्रदान किया था। **कुछ प्रमुख शैलियाँ इस प्रकार हैं:**

तंजावुर चित्रकला: तंजावुर या तंजौर शैली **सजावटी चित्रकला (decorative paintings) की विशेष शैली के लिये प्रसिद्ध** है। 18वीं शताब्दी के दौरान **मराठा शासकों ने इस शैली को संरक्षण** प्रदान किया था।

- ये चित्रकला अद्वितीय है क्योंकि ये उत्तर भारत में सबसे ज़्यादा पसंद किये जाने वाले**कपड़े और चर्मपत्र के बजाय काँच तथा बोर्ड पर बनाई** जाती हैं। **शानदार रंग पैटर्न के साथ-साथ सोने की पत्ती का उपयोग** इन चित्रों की विशिष्टता है।
- इसमें जीव से भी बड़ी **छवियाँ बनाने हेतु अलंकरण के लिये कई प्रकार के रत्नों** और **कटे हुए काँच के टुकड़ों** का उपयोग किया गया है।
  - ये चित्रकला **सरफोजी महाराज के संरक्षण में अपने चरम पर पहुँची**, जो कला के महान संरक्षक थे।

मैसूर चित्रकला: इस **चित्रकला को मैसूर प्रांत के शासकों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है,** जिसे ब्रिटिश काल में भी जारी रखा गया।

- इस चित्रकला में **म्यूट रंगों (muted colour) का उपयोग होता है, जो इतने चमकीले नहीं होते कि पृष्ठभूमि को प्रभावित कर सकें।**
- मैसूर चित्रकला का **प्रमुख विषय हिंदू देवी-देवताओं का चित्रण** है। इन चित्रों की अनोखी बात यह है कि इनमें**प्रत्येक चित्र में दो या दो से अधिक आकृतियाँ होती हैं और एक आकृति आकार तथा रंग में अन्य सभी आकृतियों से अधिक प्रभावी होती है।**
  - इस चित्रकला में **'गेसो पेस्ट (gesso paste)'** तकनीक का उपयोग होता है, जो **जिंक ऑक्साइड और अरबी गोंद का मिश्रण है।** यह चित्रकला को एक विशेष आधार प्रदान करता है, जिससे पृष्ठभूमि पर चमक विकसित होती है।

आधुनिक चित्रकला

कंपनी पेंटिंग: औपनिवेशिक काल में, **चित्रकला की एक मिश्रित शैली** उभरी जिसने राजपूत, मुगल और चित्रकला की अन्य **भारतीय शैलियों के तत्त्वों को यूरोपीय तत्त्वों** (शैलियों और तकनीकों) के साथ जोड़ा।

- ये चित्रकला तब **विकसित हुई, जब ब्रिटिश कंपनी के अधिकारियों ने भारतीय शैलियों में प्रशिक्षित चित्रकारों को नियुक्त किया** । उन्होंने **अपने नियोक्ताओं के भारतीय प्रशिक्षण के साथ यूरोपीय भाव को मिश्रित किया। इसे 'कंपनी पेंटिंग्स' कहा जाता था।**
- **इनमें जलीय रंगों के उपयोग और तकनीक में रैखिक परिप्रेक्ष्य एवं छायांकन (perspective and shading**) की उपस्थिति इन्हें आकर्षक बनाती है।
- **लॉर्ड इम्पे और मार्क्वेस वेलेस्ले ने चित्रकारों को संरक्षण दिया;** कई चित्रकार भारत की 'विदेशी' वनस्पतियों तथा जीवों को चित्रित करने में लगे हुए थे।

बाज़ार पेंटिंग (Bazaar Painting): यह शैली भी भारत में **यूरोपीय शैलियों से प्रभावित थी।** ये कंपनी पेंटिंग से भिन्न है क्योंकि **इस शैली में यूरोपीय तकनीकों और विषयों को भारतीय शैली के साथ मिश्रित किया गया था।**

- **बाज़ार शैली ने भारतीय शैली से प्रभावित नहीं है बल्कि रोमन और यूनानी शैलियों से अधिक प्रभावित है।** इस शैली में चित्रकारों ने **ग्रीक और रोमन मूर्तियों की नकल की है।**
- यह शैली **बंगाल तथा बिहार क्षेत्र में प्रचलित** थी।
- ग्रीको-रोमन विरासत के हिस्से के रूप में, **इस शैली में रोज़मर्रा के लिये बाज़ार पेंटिंग बनाई गई, जिसमें भारतीय बाज़ारों को यूरोपीय पृष्ठभूमि के साथ दिखाया गया था।**
- सबसे प्रसिद्ध शैलियों में से एक **ब्रिटिश अधिकारियों के सामने भारतीय वेश्याओं** को नृत्य करते हुए चित्रित करना था। इस शैली में धार्मिक विषयों को भी चित्रित किया, लेकिन भगवान गणेश **जैसे दो से अधिक कुल्हाड़ियों और हाथी के चेहरे वाले भारतीय देवी-देवताओं की आकृतियाँ निषिद्ध थीं क्योंकि वे प्राकृतिक मानव मूर्ति की यूरोपीय धारणा से भिन्न थीं।**

बंगाल चित्रकला शैली: माना जाता है कि बंगाल शैली का वर्ष 1940-1960 के दशक की **चित्रकला की मौजूदा शैलियों के प्रति प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण** था। यह शैली अनोखी शैली है क्योंकि **इसमें साधारण रंगों का उपयोग किया जाता है।**

- **बंगाल शैली का विचार** 20वीं सदी की शुरुआत में **अभनींद्रनाथ टैगोर के कार्यों से सामने आया।** उन्होंने **भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों को शामिल करने का प्रयास किया और कलाकारों के बीच पश्चिमी कला शैली के प्रभाव को कम करने का प्रयास किया।**
- अभनींद्रनाथ टैगोर को **उनकी पेंटिंग भारत माता और विभिन्न मुगल-थीम वाली पेंटिंग के लिये जाना जाता है।**
- इस शैली के अन्य उल्लेखनीय चित्रकार **नंदलाल बोस हैं। जिन्हें भारत के संविधान के मूल दस्तावेज़ को प्रकाशित करने का कार्य सौंपा गया था।**

चत्रि: अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचति "भारत माता" (1905)

- **रवींद्रनाथ टैगोर इस शैली से संबंधति हैं।** उनकी पेंटगि अद्वतीय हैं **क्योंक उिनमें प्रमुख काली रेखाओं का उपयोग कयिा गया है जसिसे वषिय बहुत प्रमुख दखिता है। उन्होंने छोटे आकार की पेंटगि बनाई।**
- **चत्रिकला की क्यूबस्टि शैली:** चत्रिकला के क्यूबस्टि आंदोलन ने **यूरोपीय क्यूबस्टि आंदोलन से प्रेरणा ली।**

- इस शैली के अंतर्गत **वस्तुओं को तोड़ा जाता था, उनका विश्लेषण किया जाता था और फिर पुनः जोड़ा जाता था।** कलाकार ने अमूर्त कला रूपों के उपयोग के माध्यम से कैनवास पर इस प्रक्रिया का पुनर्निर्माण किया।
- इसमें **रेखा और रंग के बीच सही संतुलन हासिल करने** का प्रयास किया गया है।
- भारत में सबसे लोकप्रिय **क्यूबिस्ट कलाकारों में से एक एम.एफ हुसैन थे**, जिन्होंने **'पर्सनिफिकेशन ऑफ रोमांस'** नामक चित्रों की एक शृंखला बनाई थी।

- **प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप:** इसमें प्रगतिशील और साहसिक विषयों का उपयोग किया जाता है। इसमें **उन विषयों को अधिक अमूर्त विषयों** के साथ एकीकृत किया।
  - इसमें एकरूपता का अभाव होता है, लेकिन **ये यूरोपीय आधुनिकतावाद से प्रेरित थे।** इस कला के **संस्थापक फ्रांसिस न्यूटन सूजा थे** लेकिन अधिक प्रसिद्ध सदस्य एस.एच. रजा, एच. ए गाडे, आरा आदि थे।
  - **यहाँ तक कि प्रसिद्ध क्यूबिस्ट चित्रकार एम.एफ हुसैन भी प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के सदस्य थे।**

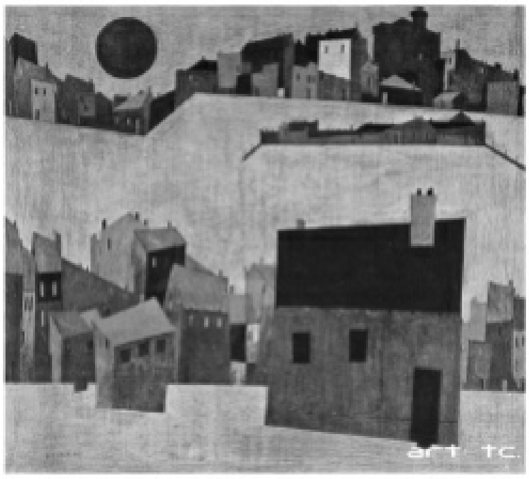

S.H.Raza, *Hautde Cagnes*, Gouche on Paper

राजा रविवर्मा कौन थे?

- इन्हें **आधुनिक चित्रकला शैली का प्रवर्तक माना जाता** है। **पश्चिमी तकनीकों और विषयों** के प्रभाव के कारण इनकी शैली को 'आधुनिक' कहा जाता है।

- वह अद्वितीय थे क्योंकि इन्होंने **रंग और शैली की पश्चिमी तकनीकों के साथ दक्षिण भारतीय चित्रकला के तत्त्वों को एक साथ मिलाया था।** वह केरल राज्य से संबंधित थे, उनके शानदार ब्रश स्ट्रोक और लगभग जीवंत चित्रों के कारण उन्हें **'पूर्व का राफेल' कहा जाता था।**
- इनकी **कुछ बहुत प्रसिद्ध कृतियों में लेडी इन द मूनलाइट, मदर इंडिया** आदि शामिल हैं। इन्होंने महाकाव्य रामायण से अपने चित्रों के लिये देशभर में पहचान हासिल की, विशेष रूप से 'रावण के द्वारा सीता का हरण' शीर्षक वाली पेंटिंग के लिये।
- **उन पर हाल ही में एक फिल्म बनी है, जिसका नाम है "रंग रसिया"।**

UPSC विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो (2017)

(a) अजंता में है
(b) बादामी में है
(c) बाघ में है
(d) एलोरा में है

उत्तर: (a)

प्रश्न. भारतीय कला व संस्कृति के इतिहास के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये: (2014)

	विख्यात मूर्तिशिल्प		स्थल
1.	बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य प्रतिमा जिसमें ऊपर की ओर अनेकों दैवी संगीतज्ञ तथा नीचे की ओर उनके दुखी अनुयायी दर्शाए गए हैं	:	अजन्ता
2.	प्रस्तर पर उत्कीर्ण विष्णु के वराह अवतार की विशाल प्रतिमा जिसमें वह देवी पृथ्वी को गहरे विक्षुब्ध सागर से उबारते दर्शाए गए हैं	:	माउंट आबू
3.	विशाल गोलाश्मों पर उत्कीर्ण "अर्जुन की तपस्या"/"गंगा-अवतरण"	:	मामल्लपुरम

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: C

प्रश्न. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों पर विचार कीजिये: (2013)

1. अजंता की गुफाएँ
2. लेपाक्षी मंदिर
3. साँची स्तूप

उपर्युक्त स्थलों में से कौन-सा/से भित्ति चित्रकला के लिये भी जाना जाता है/जाने जाते हैं?

(a)केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3
(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

प्रश्न. प्राचीन भारत में गुप्त काल के गुफा चित्रों के केवल दो ज्ञात उदाहरण हैं। इन्हीं में से एक है अजंता की गुफाओं के चित्र। गुप्तकालीन चित्रों का अन्य मौजूद उदाहरण कहाँ है? (2010)

(a) बाग गुफाएँ
(b) एलोरा की गुफाएँ
(c) लोमस ऋषि गुफाएँ
(d) नासिक की गुफाएँ

उत्तर: (b)

प्रश्न. सुप्रसिद्ध चित्र "बणी-ठनी" किस शैली का है? (2018)

(a) बूँदी शैली
(b) जयपुर शैली
(c) काँगड़ा शैली
(d) किशनगढ़ शैली

उत्तर: (d)

प्रश्न. कलमकारी चित्रकला निर्दिष्ट (रेफर) करती है: (2015)

(a) दक्षिण भारत में सूती वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी
(b) पूर्वोत्तर भारत में बाँस के हस्तशिल्प पर हाथ से किया गया चित्रांकन
(c) भारत के पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में ऊनी वस्त्र पर ठप्पे (ब्लॉक) से की गई चित्रकारी
(d) उत्तर-पश्चिमी भारत में सजावटी रेशमी वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित प्रसिद्ध नामों पर विचार कीजिये: (2009)

1. अमृता शेरगिल
2. विकास भट्टाचार्जी
3. एन.एस. बेंद्रे
4. सुबोध गुप्ता

उपरोक्त में से कौन कलाकार के रूप में सुविख्यात है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (d)

?????:

प्रश्न. भारत की मध्यपाषाण-शिला-कला न केवल उस काल के सांस्कृतिक जीवन को, बल्कि आधुनिक चित्रकला से तुलनीय परिष्कृत सौंदर्य बोध को भी प्रतिबिंबित करती है। इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। (2015)

प्रश्न. भारतीय कला विरासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये। (2018)

प्रश्न. भारतीय कला में "बाँसुरी बजाते कृष्ण" बहुत लोकप्रिय हैं। चर्चा कीजिये। (2012)